आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 28-10-14

आत्मा, परमात्मा और सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर हमें मास्टर ज्ञान-सागर बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप तुम्हें जो नॉलेज देते हैं, इसमें कोई रिद्धि-सिद्धि की बात नहीं. यह तो है पढ़ाई, जिसे तुम्हें ऐक्यूरेंट पढ़कर फिर धारण करना हैं. इसमें कोई छू मन्त्र से काम नहीं चलता है.

ज्ञान-सागर बाप ने हमें जो नॉलेज दी है, उसके तीन मुख्य भाग हैं - आत्मा, परमात्मा और सारे सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान.

आज की बाबा की सारी मुरली पढ़ाई पर हैं. तो मुरली से इन तीन टॉपीक पर कुछ पॉइन्टस निकालकर, उस पर विचार-सागर-मंथन करेंगे तो बहुत अच्छे-अच्छे ज्ञान-रतन निकाल सकते है जो हम पहले अपने में धारण कर दूसरों को सुनावे तो अच्छी सेवा होगी.

<u>आत्मा पर कहे गये बाबा के महा-वाक्यों</u> --

- तुम आत्माये यहॉ पार्ट बजाने आते हो तो तुम्हें शरीर मिलता हैं. वह है शिव, तुम हो सालिग्राम. शिव और सालिग्रामों की पूजा भी होती है क्योंकि चैतन्य में होकर गये हैं.
- तुम आत्माये जब यहॉ शरीर धारण करती हो तो तुम्हारा नाम रखा जाता है. आत्मा अविनाशी है शरीर विनाशी है. आत्मा एक शरीर छोड़, दूसरा जाकर लेती है.
- आत्मा ही ८४ जन्म लेकर यहॉ पार्ट बजाती हैं.
- तुम्हारी आत्मा में सतयुग में जो शक्ति थी वह आहिस्ते-आहिस्ते, जन्म-बाय-जन्म डिग्रेड़ होती जाती हैं अर्थात आत्मा में जो सतोप्रधान शक्ति थी वह तमोप्रधान हो जाती हैं. पहले जो सतोप्रधान विश्व के मालिक थे, अभी तमोप्रधान है तो ताकत कम हो गई है. शक्ति नहीं रही हैं. अभी तुम्हारी आत्मा को ताकत मिलती है सर्वशक्तिमान बाप से.

<u>परमात्मा पर कहे गये बाबा के महा-वाक्यों</u> --

- बाबा ने कहा, जब यहॉ आते है तो बच्चों को बुद्धि में होना चाहिए की हम पढ़ाई पढ़ने के लिए जाते हैं. पढ़ाने वाले को टीचर कहा जाता हैं. भगवानुवाच है भी एक गीता. गीता पढ़ाने वाले का पुस्तक है, परन्तु पुस्तक आदि कोई पढ़ाते नहीं हैं. इनके हाथ में कोई गीता आदि कुछ भी नहीं हैं. यह तो है स्वयं शिव भगवानुवाच.

- मनुष्य (कृष्ण, राम आदि) को भगवान नहीं कहा जाता. सब मनुष्यों का भगवान तो एक ही है ऊंच ते ऊंच. एक को ही कहा जाता है सर्व शक्तिमान, वर्ल्ड ऑलमाईटी ऑथोरिटी. वही ऑथोरिटी का अर्थ तुम्हें समझाते हैं.

- उनको कहा जाता है सुप्रीम सोल. सभी मनुष्य आत्माओं का बाप को बाबा कहेंगे. बाबा का नाम है शिव. परमात्मा शिव को ही निराकार कहा जाता है. उनका कोई शरीर नहीं.

- ऊंचे ते ऊंच तो एक ही भगवान है. वह है निराकार और उनकी महिमा बिल्कुल अलग है.

- बाप खुद आकर अपना परिचय देते है, कहते है मैं सारे चक्र में एक ही बार आकर इनमें प्रवेश करता हूँ. तुम बच्चे जानते हो, उनको ही सर्वशक्तिमान कहते हैं.

सृष्टि चक्र के ड्रामा पर कहे गये बाबा के महा-वाक्यों --

- मूलवतन, सूक्ष्मवतन और स्थूलवतन - यह है सारी युनिवर्स. खेल कोई मूलवतन या सुक्ष्मवतन में नहीं चलता है, नाटक सारा यहाँ ही चलता है. इनको कहा जाता है ८४ के चक्र का नाटक. यह बना-बनाया खेल है.

- अभी सब मनुष्य है तमोप्रधान, इसको कहा जाता है कलियुग. अभी है ही नर्क तो कोई भी मनुष्य ऐसे नहीं कह सकता कि यहाँ ही हमारे लिए स्वर्ग है, क्योंकि हमारे पास बहुत धन दौलत है. यह हो नहीं सकता. सतयुग पास्ट हो गया, इस समय नहीं हो सकता.

- सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था. भारतवासी उस समय सतयुगी कहलाते थे. अभी जरूर कलयुगी कहलायेंगे.

- सतयुग को योगी दुनिया और कलियुग को भोगी दुनिया कहेंगे. वहाँ है योगी क्योंकि विकार का भोग-विलास नहीं हैं.

- यह तो स्कूल है. स्कूल में कोई जादू, छू मन्त्र वा रिद्धि-सिद्धि की बात नहीं. यहाँ तुम्हारा लक्ष्य है लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनना. इसके लिए पवित्र जरूर बनना पड़े. यह है ही पतित दुनिया तो इसे वैराग्य भी जरूर चाहिए.

- सतयुग में देवताये होते है, यहाँ है मनुष्य. देवताओं की पूजा होती है क्योंकि वह सर्वगुण सम्पन्न, पवित्र पूज्य थे. सारे विश्व के मालिक थे. अपवित्र ही सदैव पवित्र को पूजते हैं.

- सतयुग को कहा जाता है सच-खण्ड, सब सच बोलने वाले होते हैं. भारत को सच-खण्ड कहा जाता है. झूठ-खण्ड ही फिर सच-खण्ड बनता है. सच्चा बाप ही आकर सच-खण्ड बनाते है. उनको सच्चा पातशाह, टुथ कहा जाता है. ॐ शांति.